जन्नत के खरीदार | दीनार को दीनार क्यु कहते हे

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

● जन्नत के खरीदार से मुलाकात

इमाम अबू दाउद (रह) बहुत बडे मुहद्दिस गुजरे हे उन्के वाकियात मे लिखा हे कि ये समन्दर के एक किनारे पर खडे थे और समन्दर मे जहाज आधे फर्लांग की दूरी पर खडा था चुकि किनारे पर पानी कम होता था कि वो जहाज के लिये काफी नही होता था और लोग कश्तीयो मे बैठ कर जहाज मे सवार होते, जहाज मे किसी शख्स को छींक आई उसने जोर से अलहमदु लिल्लाह कहा तो मसला ये हे कि जब किसी को छींक आये तो इस्को अलहम्द लिल्लाह कहना चाहिये और जिस्के कान मे अलहमदु लिल्लाह की आवाज आये वो जवाब मे यरहमूकल्लाह कहे, उस शख्स ने अलहमदु लिल्लाह इस जोर से कहा कि इमाम अबू दाउद (रह) के कान मे आवाज आई, अब उनका जी चाहा

कि मे शरीयत की इस चीझ पर अमल करू और यरहमूकल्लाह कहू ताकी मुझे सवाब मिले, इसलिये आपने तीन दिरहम किराये की कश्ती ली और इस कश्ती मे बैठ कर सफर कर के जहाज मे पहूचे और यरहमक अल्लाह कहा, ये गोया नेकी कमाई मुअर्रिखीन लिखते हे जिस वकत उन्होने जा कर यरहमूकल्लाह कहा गैब से एक आवाज आई, कहने वाला नजर नही आता था, आवाज ये आई ए अबू दाऊद (रह) आज आपने तीन दिरहम के बदले मे जन्नत खरीद ली.

● दीनार को दीनार कयु कहते हे

हजरत मालिक बिन दीनार (रह) का फरमान हे दीनार को इसलिये दीनार कहते हे कि वो दीन यानी ईमान भी हे, और नार यानी आग भी हे, मतलब ये की हक के साथ लोतो 'दीन', नाहक लोतो 'नार' यानी आग. (तफसीर इबने कसीर)

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.